

साम्राज्य दैनंदी

①

कारक

" संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध किया और दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है, वह "कारक" कहलाता है।
 ⇒ हिन्दी में मुख्यतः आठ कारक होते हैं जिनका विवरण निम्नवर्त में :-

① कर्ता कारक: ("ने") → संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किया का करने वाले का बोध हो उसे "कर्ता" कारक कहते हैं।
 * गीता वृत्य कर रही है। → गीता "कर्ता कारक" परसर्गराहित।
 * राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। → राम ने "कर्ता कारक" परसर्ग-साहित।

② कर्म कारक: ("को") → जिस व्यक्ति या वस्तु पर किया का फल पड़े।
 * रावण को राम द्वारा मारा। कर्मकारक - रावण
 * डाक्टर पुस्तक पढ़ता है। कर्मकारक - पुस्तक

③ करण कारक: ("से") कर्ता जिस साधन या उपकरण से किया सम्बन्ध करता है, उसे करण कारण कहते हैं।
 * माली खुरपी से घास खोंद रहा है। (खुरपी)
 * मैं रेल से आया हूँ। (रेल)

④ सम्प्रदान कारक: (केलि, से) - जिसके लिए किया की जाय, उसका बोध करने वाला बाण "सम्प्रदान कारक" कहते हैं।
 * बच्चे के लिए इधर आयी। (बच्चे के लिए)
 * मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ। (पूजा के लिए)

⑤ अपादान कारक: संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथक्ता (अलग होना) का बोध हो।
 * अनुल ने डाल से छल लेडा। (डाल से)
 * पतंग बच्चे के हाथ से दूट गई। (हाथ से)

⑥ सम्बन्ध कारक: संज्ञा व सर्वनाम का रूप जिससे वाक्य में आये (कि, की, के) हुए इन्य व्यक्ति या वस्तु से उसके सम्बन्ध का बोध हो।
 * यह रमेश का घर है। (रमेश का)
 * यह उसकी पुस्तक है। (उस की)

⑦ अधिकरण कारक! (में, पर) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से
किया के स्थान का बोध हो। ②

- * गिलास में पानी है।
- * पुस्तक मेज पर रखी है।

⑧ सम्बोधन कारक! (हे, जो, जरे) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से
किसी को पुकारने का ज्ञान हो।

- * हे पुछो! सबी का अलाकरी।
- * जरे रमेश! कहा जा रहे हो।

— निम्न में कारक छाइये ? (Home Work)

- ① खिलौना मेज पर रखा है। _____
- ② हे राम ! कैसा अनेकर है। _____
- ③ पेन से म्यू नहीं लिखते ? _____
- ④ छृष्णु ने राम को सारी बात बतादी है। _____
- ⑤ उसने पेड़ से फल तोड़े है। _____
- ⑥ जरे मित्र ! यह क्या हो रहा है। _____
- ⑦ पर्याप्ति, पेड़ की द्राया में सो गया है। _____
- ⑧ पुस्तक मेज पर रख दो। _____
- ⑨ रमेश ने चाय पी ली है। _____
- ⑩ वह मेरा मित्र है। _____

सामान्य हिन्दी

संधि

①

स्वर संधि

व्यंजन संधि

विसर्जन संधि

- (i) दीर्घ संधि
- (ii) अण संधि
- (iii) झयादि संधि
- (iv) बृद्धि संधि
- (v) गुण संधि
- (vi) पूर्व क्रप संधि

(i) दीर्घ संधि: लघु या दीर्घ इ, उ, ए, और के बाद लघु या दीर्घ अ, इ, उ, और आने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है।

अ + अ = आ → देव + अधिपति = देवाधिपति

अ + इ = ई → हिम + आलय = हिमालय

आ + अ = आ → युवा + झवस्था = युवावस्था

आ + ई = ई → महा + आशम = महाशम

इ + ई = ई → कवि + ईशा = कवीशा

इ + उ = ऊ → आभि + इष्ट = आभीष्ट

ई + ई = ई → जानकी + ईशा = जानकीशा

ई + उ = ऊ → लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा

उ + ऊ = ऊ → सिन्धु + ऊर्भि = सिन्धूर्भि

ऊ + उ = ऊ → वधु + ऊर्भि = वधूर्भि

ऋ + ऋट = ऋट → पितृ + ऋष्ण = पितृष्ण

(ii) अण संधि: लघु या दीर्घ इ, उ, ए, और के उपरांत कोई अस्मान स्वर आये तो ई, उ, और के स्थान पर क्रमशः य, र, व हो जायेगा

इ + अ = य → यदि + झप्पि = यद्यपि

ई + अ = य → देवी + झर्ण = देव्यर्ण

इ + आ = या → आति + झाचार = आत्याचार

ई + आ = या → देवी + झालय = देव्यालय

इ + उ = यु → प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

ई + ऊ = यू → प्रति + ऊर्भि = प्रत्युर्भि

ई + ऊ = यू → वाणी + ऊर्भि = वाण्युर्भि

ऊ + ई = वी → वधु + ईर्या = वद्यीर्या

उ + अ = व → अनु + झय = अन्य

क + अ = व → वधु + झर्षि = वद्यर्षि

उ + आ = वा → मधु + झात्र = मद्यात्र

ऊ + आ = वा → वधु + झाग्मन =

वद्याग्मन

ऋ + झ = र → भातृ + झर्ध = भात्यर्ध

ऋ + आ = रा → पितृ + झाल = पितृल

③ अयादि सन्धि: जब ए, से, ओ, औं के बाद कोई भी स्वर आये तो,
 ↓ ↓ ↓ ↓
 अय् आय् ओव् आव्

(2)

ए + अ = अय् → ने + अन = नयन

ऐ + अ = आय् → नै + अक = नायक

ओ + अ = ओव् → ओ + अन = अवन

औ + अ = आव् → औ + अक = पावक

④ वृद्धि सन्धि: जब लघु या दीर्घी 'अ' के बाद ए, से, ओ, औं आए तो
 ए → ऐ, से → झो, औं → झों हो जाती है।

अ + ए = ऐ → परम + स्वर्गी = परमेश्वरी

आ + ए = झो → तथा + एव = तथेव

आ + ऐ = झो → महा + एश्वरी = महेश्वरी

अ + ऐ = झो → धर्म + सेव्य = धर्मेव्य

अ + ओ = झो → जल + ओक = जलौक

अ + औं = झों → जल + औषधि = जलौषधि

आ + ओ = झो → महा + ओज = महौज

आ + औं = झों → महा + औदार्य = महौदार्य

⑤ गुण सन्धि: 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घी इ, उ, एट आये
 तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए), (ओ), (उर) हो जाती है।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र

आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र

अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर

आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर

अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार

आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

उ + एट = ऊरु → देव + एटधि = देवार्थि

आ + एट = ऊरु → राजा + एटधि = राजार्थि

आ + एट = ऊरु → राजा + एटधि = राजार्थि

⑥ पूर्वरूप सन्धि: 'अ', 'ए' या 'ओ' के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप का
 चिन्ह "s" हो जाती है। लोको + अभ्यन् = लोकोडयन्, हरे + अव = हरेऽप
 हरे + अत = हरेऽत, प्रभो + अवत् = प्रभोऽवत्

"अलंकार"

①

"अलंकरोति इति अलंकारः" — जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या
चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।
* प्रमुखः चार घटार के होते हैं।

उपमा, रूपक, श्लोष, वक्षोविति

अर्थालंकार

शब्द के स्थान पर उसके पर्याय
या अर्थ के कारण जब कविता
में सौन्दर्य। चमत्कार आता है तो
अर्थालंकार होता है।

* अर्थालंकार की संख्या अनिश्चित
है। प्रमुख निम्नलिखित हैं।

उपमा, रूपक, उपेक्षा, आतिथ्योत्तमि,
संदेह, आनन्दिमान, विशेषाभासी।

① अनुग्रह अलंकार: किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण से अधिक बार
आता है।

Ex: चारन चुन्द्र की चेहरे किरणें खेल रही हैं जल थल में।
(→ 'च' वर्ण का बावृत्ति)

② रूपक अलंकार: एक ही शब्द बार-बार आये परन्तु प्रत्येक स्थान पर
उस शब्द का अर्थात् अनिन्देश होता है।

Ex: कनक कनक ते सौ गुनी मादकता छाड़िकारी।
वा खावे बौराई नर, या पाये बैराग॥
सोना धूरा।

③ श्लोष अलंकार: जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले।

'रहेमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सन।
पानी गए न उखरें, मोती, मानस -यन॥

पानी का अर्थ = उ तु तु

केलिए केलिए भून केलिए
मानते इज्जत जल

④ वक्षोविति: जहाँ कोई बात किसी झन्य आशय से कही जाये परन्तु
कही जाना उसका अनिन्देश होता है।

को तुम हो? इत जाए कहाँ? } राधा जी ने कृष्ण जी से पूछा तुम कौन हो, यहाँ
'धनश्याम' हैं, तो किन्हें बसो। } क्यों जाये हो। कृष्ण जी ने कहा है 'धनश्याम हैं।'
राधा जी का अर्थ 'काले बाल' भी होता है। तो राधा
जी ने कहा यहाँ क्यों जाये हो, कही जाना भर बरसो।

अर्थालंकार

- ① उपमा: "एक वस्तु याव्याक्ति की समानता इसरे वकी जाए" ②
 उँगली: राधा, राति के समान सुन्दर है।
- ② रूपक: जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाये, वहा रूपक अलंकार होता है। उँगली: मुख-चन्द्र → मुख ही चन्द्रमा है।
- ③ उत्प्रेक्षा: जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहा उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
 {इसमें मानो, मानहु, मनहु, मन, जानो, जानहु, जनु, निश्चय, भैरवान}
 {इव इति उत्प्रेक्षा वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।
 उँगली: छास कहि कुटिल भई उठि ठाड़ी।
 मानहु रोष-तरंगिनी बाढ़ी।}
- ④ आनिष्टशोक्ति: किसी व्याकरण या वस्तु का बढ़ायड़ा कर वर्णन किया जाये, अथवा सीमा के बाहर तक की बात की जाये।
 उँगली: बांधा था विघु को किसे इन काली जंजिरों से।
 माणी वाले फाणियों का मुख, क्यों आरा हुड़ा था हीरोंदो।
 पिया / पुमिका, चन्द्रमा
 की जोती गरी गोंग
- ⑤ संदेह अलंकार: किसी वस्तु को देखकर संदेह बना रहे, और निश्चय न हो सके। उँगली: सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
 कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही सारी है।
- ⑥ आंतिमान (श्रम) अलंकार: जहाँ समानता के कारण किसी वस्तु में (उपमेय)
 अन्य वस्तु का (उपमान अ) श्रम हो जाये।
 उँगली: पाँय महावर देन को नाइन छोड़ी आय। { ऐड़ी की लालिमा
 पुनि-पुनि जान महावरी ऐड़ी प्रोड़ति जाय॥ } का महावर से श्रम
- ⑦ विशेषाभास: जब दो विशेषी पदार्थों का सेवयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विशेषाभास अलंकार होता है।
 उँगली: सुलगी अनुराग की आग वहाँ, } जल और आग में
 जल से भरपूर तड़ाग जेदाँ॥ } विशेषाभास है।

$$16 - 12 = 28$$

$$16 - 12 = 28$$

$$16 - 12 = 28$$

$$16 - 12 = 28$$

$$15 - 13 = 28$$

$$15 - 13 = 28$$

पाठी / सम्बन्ध
(का, की, के)

गंगाजल —
समाजोदार —
सूर्योदय —
निष्पारि —

(2)

सप्तमी विविकण
(में, पर)

विद्वान् — विशेषण का सम्बन्ध होता है।
नराधम — नरों में अधम
पुरुषों में अधम
आत्मनिक्षिर — आत्म पर निर्भर

③ कर्मधारण समादर : समाप्त के पदों में उपर्योग - उपर्यान्त मध्यवा

विद्वान् — विशेषण का सम्बन्ध होता है।

- * नीलाम्बर - नीला है अम्बर जो, पीत है सागर जो
- * नीलोत्पल, सुन्मार्गी, महाल्मा, परमेश्वर, नहाकाल्य, महेष्य, सत्संगामि, नाटकी, इकेतपत्त, नीलभक्त, नराधम, चरमसीमा, नीलाकाशा
- ④ हिंग समादर : प्रथम पद संज्ञावाचक, उससे समृह का बोध होता है।
पंतपात - पांच पातों का समादर, एवं नवरत्न : नौ सूर्यों का समादर
- * पंचरत्न, नवरत्न, त्रिक्लत, त्रिभुवन, सतसी, त्रिमुखी, अष्टपदी, चतुर्वर्णी
- ⑤ बहुशीहि समादर : तीसरे पद की प्रधानता होती है, अर्थात् अर्थी छिन्न होता है।
लम्बोदर - लम्बा है जिन्हा उत्तर (गणेश जी)
चतुर्मुख - चार हैं अङ्गादे जिसकी (विष्णु अवगानन)

* चन्द्रओत्पर, वीणापाली, गीरिधर, सहस्राम, दशामुख, जलज
(प्रियो अवगान) (मो सत्कमी) (क्षीरपूर्ण) (इन्द्रकेश) (रावण) (कृष्ण)

⑥ द्वेष समादर : "दो जोड़ा" या "त्रिमूर्ति" या "जिनके बीच "ओर" नाया

"या" का विलोप होता है।

* जाता-पिता

स्त्रील - राज

रामलक्ष्मण - राम और लक्ष्मण

रात - सौरी

पितरस - प्राता और तिता

पात - पूर्ण

लकुशा - लकुशा

धात - रसी

धर्माधर्म - धर्मी और अधर्मी

धात - रसी

हरिषंकर - हरि और शंकर

आत - तुरा

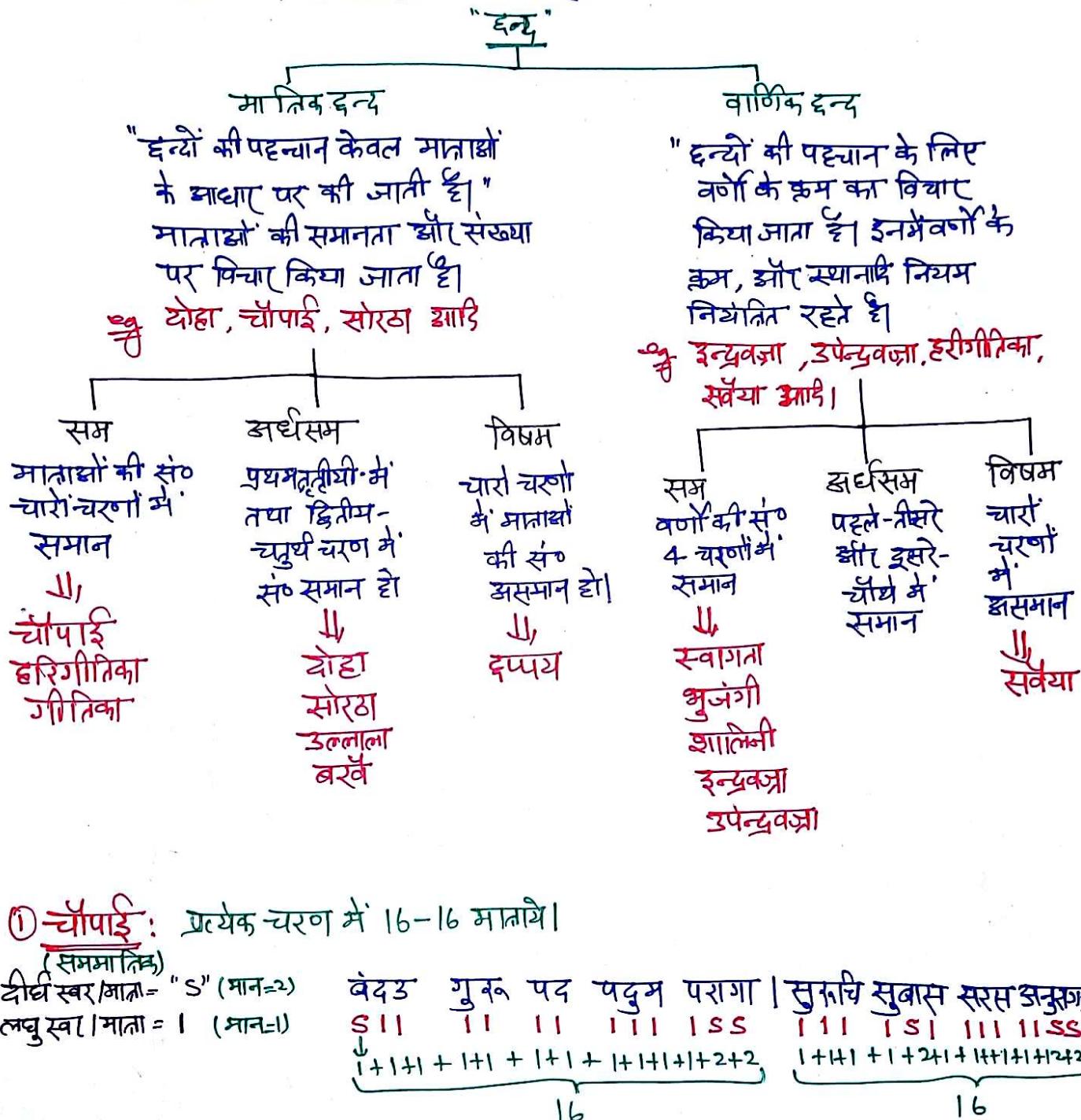
धनुष्काण - धनुष और बाण

रात - दिन

"કોણ"

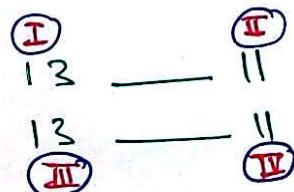
1

"माता तथा वर्षा आदि के विचार से हीने वाली वाक्य स्थना को दृढ़ कहते हैं।"
दृढ़ = "पिंगल", दृढशास्त्र = "पिंगलशास्त्र"



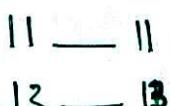
② दोहा :

(अर्क्ष सभातिक)



13, 11, 13, 11

③ सोराटः



11, 11, 13, 13

(2) व्यंजन संधि - दो वर्णों की संधि। पहला वर्ण थमि व्यंजन हो, और इसका वर्ण यादि व्यंजन अथवा स्वर हो तो, विकार से व्यंजन संधि होगी।

(1) यदि सकार 'त' वर्ग के साथ सकार या 'च' वर्ग आए तो सकार और 'त' वर्ग के स्थान पर क्रम से सकार और 'च' वर्ग हो जाते हैं।

$$\text{सत} + \text{चयन} = \text{सचयन}$$

(2) सकार या त वर्ग + षु या ट वर्ग = 'ष' \rightarrow 'ट वर्ग'

$$\text{रामसु} + \text{टीकते} = \text{रामछटीकते} \quad \text{बृहत} + \text{टिटिभ} = \text{बृहटिटिभ}$$

(3) कु, च, ट, त, प के पश्चात किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण आये तो, अथवा य, र, ल, व, अथवा कोई स्वर आये तो कु, च, ट, प के स्थान पर अपने ही वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है।

$$\text{अच} + \text{अन्त} = \text{अजन्त}, \quad \text{वाकु} + \text{जाल} = \text{वाग्जल}$$

\downarrow 'ज' (तीसरा वर्ण) \downarrow 'ग' (तीसरा वर्ण)

(4) त - द के बाद यादे ल रहे तो त \rightarrow द में परिवर्तित होगा, और 'न' के पश्चात ल रहे तो न का अनुनासिक के साथ ल हो जायेगा।

$$\text{उत्त} + \text{लास} = \text{उल्लास}$$

(5) यदि हृत्ख स्वर के पश्चात इ हो तो इ के पूर्व च जुड़ जाता है।

$$\text{परि} + \text{देद} = \text{परिद्देद}$$

(6) किसी पद के अंत में 'म' आया हो और उसके बाद कोई व्यंजन वर्ण हो तो असकी जगह अनुस्वार हो जाता है।

$$\text{गृहम} + \text{गच्छते} = \text{गृहंगच्छते}$$

$$\text{दुःखम्} + \text{प्राप्नोति} = \text{दुःखंप्राप्नोति}$$

$$\text{हरिभि} + \text{बंदे} = \text{हरिबंदे}$$

(3) विसर्गी संधि: विसर्ग (:) + स्वर या व्यंजन का विकार

(1) यदि 'ः' से पहले और बाद में 'अ' हो तो, ":" \rightarrow "ओ"

$$\text{अः} + \text{आ} = \text{ओ}$$

$$\text{तेजः} + \text{आसि} = \text{तेजोसि}$$

$$\text{यशः} + \text{अश्विलाष्मी} = \text{यशोश्विलाष्मी}$$

(4)

- ५५ ३ मई २०१६ बंगलुरु में आयोजित १५वें जूनियर फेडरेशन कप नेशनल स्पर्थलेखिम्स चैम्पियनशिप ने महिलाओं की १७०० रुपैयाँ डॉड की विजेता:-

लिली दास (पश्चिम बंगाल)

- ५६ UEFA (Union of European Football Association) के अध्यक्ष पद से दिनांक १ मई २०१६ को त्यागपत्र दिया:- माइकल प्लाटिनी ने।

- ५७ १३ मई २०१६ को IFC क्रिकेट समिति का अध्यक्ष नियुक्तः
→ अनिल कुमार

- ५८ BCCI के अध्यक्षः अनुराग ठाकुर, सोसा (२२ मई २०१६ को)

- ५९ IFC के स्वतंत्र अध्यक्ष (Independent Chairman) चुने गये: शशांक मनोहर
(१२ मई २०१६)

- ६० FIFA की पहली महिला महासचिव निर्वाचितः फात्मा सांबा डियोफ समौरा
(सैनेगल की निवासी)
diwakor special classes

- ६१ भारत - जिम्बाब्वे T-20 क्रिकेट मैच (२२ जून २०१६)

विजेता — भारत (२-१)

मैन ऑफ द सीरीज - बरींदर सरन

- ६२ क्रिकेट में १०,००० रन बनाने वाले इंग्लैंड के पहले बल्लेबाज - एलिस्टर क्रूक
(इंग्लैंड के क्रान्तीकारी)

* सबसे बड़ा आयु में बनाकर सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड भी तोड़ा।

- ६३ ग्रैंड चेस द्वारा द्विनींबेट २०१६ → मैनसा कार्लसन (नार्को कैपिशन मैमियन)
* भारत के विश्वनाथन आनंद चौथे स्थान पर हो।

- ६४ भारतीय दाकी महासंघ द्वारा जूनियर पुरुष दाकी विषय कप के लिए चिह्नित हुयान को न्युनार्ड (उप्र०) → ४-१४ दिसम्बर २०१६

- ६५ महिला जूनियर छिक्का कम्पटाकी का आयोजनः सौंटियागो (२५ नवम्बर से ५ दिसम्बर २०१६)

- ६६ फ्रेंच ओपन २०१६ (१५ मई - ५ जून) - पेरिस में खेला गया।

पुरुष एकल — जोवाह जोकोविच (सार्बिया) → * एंड्री गरे (हिस्पेन)

महिला एकल — जार्भिन मुगुरुजा (स्पेन) → सेरेना विलियम्स (USA) उपविजेता

छिक्का चुश्ति — लिंग्टर पेस + मार्टिना हिंगिट, उपविजेता → सानिया मिस्री + बवान डोआ

समाप्ति

(1)

① अव्ययीआव समाप्ति: समाप्ति का पहला पद उपर्यान होता है, समाप्ति पर अव्यय होता है।
संस्करण - आसिके सामग्रे, उपर्याद - डार्थ के जनुसार, मथारानि - इनके जनुसार
जन्य उदाहरण → आजन्म, यथाविधि, दिनानुदिन, निर्भय, प्रत्यंग, प्रत्यक्ष,
परोक्ष, आपादमरक्त, प्रत्युपकार, उत्तिदिन, यथाशास्ति,
निर्भय, अरपेट, प्रत्यंग, बोकार, बेकार, आजन्म, मनमाना,
व्यर्थ, आमरण, यावज्जीवन

② तत्पुरुष समाप्ति: पहला पद गाँण होता है, उन्हें पद की उपर्यानता होती है।
सामान्यतः प्रथम पद विशेषण और द्वितीय पद विशेषण होता है। तथा दोनों को के मध्य कारक (द्वितीया-स-सप्तमीतक) का लोप हो जाता है।

कारक / विभक्ति	समाप्तिशब्द	विघट्ट
<u>द्वितीया/कर्ता तत्पुरुष</u> (को)	{ गच्छनचुम्ही — गगन को चुम्हने वाला माखनचोर — माखन को चुराने वाला मनोहर — मन को हरने वाला गृहागत — घृह को आगत	
<u>द्वितीय/करण</u> (से)	{ भदशून्य — भद से शून्य क्षुपिति — दण्ड से पीड़ित शोकउत्स — शोक से उत्सुक श्वमौजीवी — श्वस से जीने वाला	
<u>चतुर्थी/सम्प्रदान</u> (के लिए)	{ सभाभवन — सभा के लिए भवन गोदाला — गोदा के लिए शाला मालगोदाम — माल के लिए गोदाम लोकहितकारी — लोक के लिए हितकारी	
<u>पंचमी/अपादान</u> (से ब्लङ्ग होता)	{ क्ललहीन — क्लल से हीन वृक्षपतित — वृक्ष से पतित प्रटणमुक्त — प्रटण से मुक्त पदच्युत — पद से च्युत	

"रस"

(2)

रस	स्थायी आव
१ शृंगार	रति
२ हास्य	हास्य
३ करुण	शोक
४ वीर	उत्साह
५ रौद्र	फ्रोथ
६ भयानक	भय
७ वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
८ अद्भुत	चिकित्स
९ शान्त	निर्वेद (वैराग्य)
१० वात्सल्य	वात्सल
११ अक्षित	अक्षित

{राम को रूप निहारति जानकी कंगन के नग की परदाही।} **शृंगाररस**
 {याते सबे सुख भूलि गइ कर तोकि रही पल तारति नाही॥} (राही)

{जेहि दिसि नारद बैठे फूली । सो दिसि तोहि न बिलोकी भूली।} **हास्यरस**
 {पुनि-पुनि मुनि छसहिं छकुलाहीं । दोषि दसा हर-गन मुसकाही॥} (हास्य)
 [नारद के वानर रूप की कल्पना करके आङ्गेप किया गया ६])

{पाँय बेहाल बिपदन सो अये, केटक-जाल लैगे पुनिजोये।} **करुणरस**
 {हाय ! भडादुःख पाये सखा ! तुम आये इर्ते न किंते दिन खोये॥} (शोक)
 (सुदामा की दयनीय दशा पर कृष्ण जी का प्रिन्तन)

{जय के दृढ़-विद्वासु-युक्त थे दीप्तिमान जिनके मुख-मंडल।} **वीररस**
 {पर्वत की भी खण्ड-खण्ड कर रजकण कर केने की चंचल॥} (उत्साह)

{माझे लघ्न, कुटिल भयी भौंहै।} **रौद्ररस**
 {रद-पट फरकत भैन रिसौंहै॥} (कोश्चु)
 {कहि न सका रघुवीर डर, लगे वधन जनु बान।} **रौद्ररस**
 {नाइ राम-पद-कमल-भुग, बोले गिरा घसाइ॥} (कोश्चु)

"अलंकार"

①

"अलंकरोति इति अलंकारः" — जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या
चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।
* प्रमुखः चार घटार के होते हैं।

उपमा, रूपक, श्लोष, वक्षोविति

अर्थालंकार

शब्द के स्थान पर उसके पर्याय
या अर्थ के कारण जब कविता
में सौन्दर्य। चमत्कार आता है तो
अर्थालंकार होता है।

* अर्थालंकार की संख्या अनिश्चित
है। प्रमुख निम्नलिखित हैं।

उपमा, रूपक, उपेक्षा, आतिथ्योत्तमि,
संदेह, आनन्दिमान, विशेषाभासी।

① अनुग्रह अलंकार: किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण से अधिक बार
आता है।

Ex: चारन चुन्द्र की चेहरे किरणें खेल रही हैं जल थल में।
(→ 'च' वर्ण का बावृत्ति)

② रूपक अलंकार: एक ही शब्द बार-बार आये परन्तु प्रत्येक स्थान पर
उस शब्द का अर्थात् अनिन्देश होता है।

Ex: कुनक कुनक ते सौ गुनी मादकता छाड़िकारी।
वा खावे बौराइ नर, या पाये बैराग॥
सोना धूरा।

③ श्लोष अलंकार: जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले।

'रहेसन' पानी राखिये, बिन पानी सब सन।
पानी गए न उखरें, मोती, मानस -यन॥

पानी का अर्थ = उ तु तु

के लिए के लिए भून के लिए
मानते इज्जत जल

④ वक्षोविति: जहाँ कोई बात किसी अन्य आशय से कही जाये परन्तु
कही जाना उसका अनिन्देश होता है।

को तुम हो? इत आए कहाँ? } राधा जी ने कृष्ण जी से पूछा तुम कौन हो, यहाँ
'धनश्याम' हैं, तो किन्हें बसो। } क्यों जाये हो। कृष्ण जी ने कहा है 'धनश्याम हैं।'
राधा जी का अर्थ 'काले बाल' भी होता है। तो राधा
जी ने कहा यहाँ क्यों जाये हो, कही जाना भर बरसो।

"विष्टा पूय रनधिर कच हाडा, }
 बरषद कबहुं उपल बहु द्वाडा" } वीआस रस (जुगुसा)
 (वह कभी पिष्ठा, यून, बाल और ईड़िया बरसाता था,
 छाँकभी बहुत सारे फथर फेंकने लगता था)

"समस्त सर्पे संग श्याम ज्यों कड़े
 कलिंद की नन्दिनी के सु-झंक से। } अथानक रस
 खड़े किनारे जिनने मनुष्य थे;
 सभी महा शंकित मीत हो उठे॥" } (भय)

{ आखिल भुवन घर- डचर जग हरिमुख मंलाखिमानु }
 { चकित मयी, गदगद वचन, विकसित दुग्धपुलकानु॥ } अद्भुत
 रस (विहग)

{ समता लहि सीतत भया, तमिरी मोट की ताप। } शांत रस
 { निष्ठि-वासर सुख निधि लसा, क्षंतर धगड़या आप॥ } (निर्वद)

{ यशोदा हरि पातने सुलावै। }
 { हरलावै दुतरावै जोइ-सोई कुड़गावै॥ } वात्सल्य रस
 (पत्सल)

{ जाको हरि हृद झंग करयों। }
 { सोइ सुसील, पुनीत, वेद- विद विद्या-गुननि अरयो॥ }
 ↴ भक्तिरस (भक्ति)

(iv) यदि विसर्ग (ः) के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग (ः) का रूप नहीं बदलता।

इजः + कण = रजःकण, पयः + पान = पयःपान

(v) विसर्ग (ः) + च, छ, श → श'

कः + चित् = कश्चित्, दुः + शास्त्र = दुश्शास्त्र,

निः + चत् = निश्चयत्, निः + दल = निश्चिल

(vi) विसर्ग (ः) + ञ, ठ, घ → घ'

दुः + ट = दुष्ट, नः + ञ = नष्ट

(vii) विसर्ग (ः) से पहले इया "उ" हो बाद में क, ख, प, या फ, तो विसर्ग (ः) → घ

निः + काम = निष्काम, निः + कपट = निष्कपट, निः + पाप = निष्पाप

(viii) विसर्ग (ः) के बाद त, थ, या स हो तो विसर्ग (ः) → स्

मनः + ताप = मनस्ताप, निः + संदेह = निस्सन्देह

- निम्न में संधि बतायें ?

- ① अत्यल्प →
- ② पावन →
- ③ दिग्भवर →
- ④ निष्पाप →
- ⑤ वर्नोषधि →
- ⑥ सूर्योदय →
- ⑦ अविष्कर →
- ⑧ सत्यरिति →
- ⑨ सप्तर्षि →
- ⑩ मनोबल →
- ⑪ तथैप →
- ⑫ गंगोदक →
- ⑬ अत्यादश्यक →
- ⑭ यशोधरा →
- ⑮ तन्मय →

निम्न में संधि विच्छेद बतायें।

- ① पुनर्जन्म _____
- ② पितृण _____
- ③ शुद्धिष्ठिर _____
- ④ सत्कर्म _____
- ⑤ तपोभ _____
- ⑥ मृत्युपरांत _____
- ⑦ उपर्युक्त _____
- ⑧ अन्वेषण _____
- ⑨ जग्धीश्वा _____
- ⑩ रामायण _____
- ⑪ उज्ज्वल _____
- ⑫ निराहार _____
- ⑬ मनोआव _____
- ⑭ स्वागत _____
- ⑮ निष्पीकार _____

(3) अयादि सन्धि: जब ए, से, ओ, औं के बाद कोई भी स्वर आये तो,
 ↓ ↓ ↓ ↓
 अय् आय् ओव् आव्

(2)

$$\begin{aligned} \text{ए} + \text{अ} &= \text{अय्} \rightarrow \text{ने} + \text{अन} = \text{नयन} \\ \text{ऐ} + \text{अ} &= \text{आय्} \rightarrow \text{नै} + \text{अक} = \text{नायक} \\ \text{ओ} + \text{अ} &= \text{ओव्} \rightarrow \text{ओ} + \text{अन} = \text{भवन} \\ \text{औं} + \text{अ} &= \text{आव्} \rightarrow \text{औं} + \text{अक} = \text{पावक} \end{aligned}$$

(4) वृद्धि सन्धि: जब लघु या दीर्घी 'अ' के बाद ए, से, ओ, औं आए तो
 ए → ऐ, से → ओ, औं → हो जाती है।

$$\begin{aligned} \text{अ} + \text{ए} &= \text{ऐ} \rightarrow \text{परम} + \text{स्वर्गी} = \text{परमेश्वरी} \\ \text{आ} + \text{ए} &= \text{ऐ} \rightarrow \text{तथा} + \text{एव} = \text{तथेव} \\ \text{आ} + \text{ऐ} &= \text{ऐ} \rightarrow \text{महा} + \text{ऐश्वर्य} = \text{महेश्वरी} \\ \text{अ} + \text{ऐ} &= \text{ऐ} \rightarrow \text{धर्म} + \text{ऐक्य} = \text{धर्मेक्य} \\ \text{अ} + \text{ओ} &= \text{ओं} \rightarrow \text{जल} + \text{ओक} = \text{जलौक} \\ \text{अ} + \text{ओं} &= \text{ओं} \rightarrow \text{जल} + \text{ओषधि} = \text{जलौषधि} \\ \text{आ} + \text{ओं} &= \text{ओं} \rightarrow \text{महा} + \text{ओज} = \text{महौज} \\ \text{आ} + \text{ओं} &= \text{ओं} \rightarrow \text{महा} + \text{ओदार्य} = \text{महौदार्य} \end{aligned}$$

(5) गुण सन्धि: 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घी इ, उ, एट आये
 तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए), (ओं), (उर) हो जाती है।

$$\begin{aligned} \text{अ} + \text{इ} &= \text{ए} \rightarrow \text{देव} + \text{इन्द्र} = \text{देवेन्द्र} \\ \text{आ} + \text{इ} &= \text{ए} \rightarrow \text{महा} + \text{इन्द्र} = \text{महेन्द्र} \\ \text{अ} + \text{ई} &= \text{ए} \rightarrow \text{परम} + \text{ईश्वर} = \text{परमेश्वर} \\ \text{आ} + \text{ई} &= \text{ए} \rightarrow \text{महा} + \text{ईश्वर} = \text{महेश्वर} \\ \text{अ} + \text{उ} &= \text{ओ} \rightarrow \text{पर} + \text{उपकार} = \text{परोपकार} \\ \text{आ} + \text{उ} &= \text{ओ} \rightarrow \text{महा} + \text{उत्सव} = \text{महोत्सव} \\ \text{आ} + \text{ऊ} &= \text{ओं} \rightarrow \text{जंगा} + \text{ऊमि} = \text{जंगोमि} \\ \text{उ} + \text{एट} &= \text{अर} \rightarrow \text{देव} + \text{अट्टधि} = \text{देवार्षि} \\ \text{आ} + \text{एट} &= \text{अर} \rightarrow \text{राजा} + \text{अट्टधि} = \text{राजर्षि} \end{aligned}$$

(6) पूर्वरूप सन्धि: 'अ', 'ए' या 'ओं' के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप का
 चिन्ह "s" हो जाती है। लोको + अभ्यन् = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽप
 हरे + अत = हरेऽत, प्रभो + अवत् = प्रभोऽवत्

अर्थालंकार

- ① उपमा: "एक वस्तु याव्याक्ति की समानता इसरे वकी जाए" ②
 उँगली: राधा, राति के समान सुन्दर है।
- ② रूपक: जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाये, वहा रूपक अलंकार होता है। उँगली: मुख-चन्द्र → मुख ही चन्द्रमा है।
- ③ उत्प्रेक्षा: जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहा उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
 {इसमें मानो, मानहु, मनहु, मन, जानो, जानहु, जनु, निश्चय, भैरवान}
 {इव इति उत्प्रेक्षा वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।
 उँगली: छास कहि कुटिल भई उठि ठाड़ी।
 मानहु रोष-तरंगिनी बाढ़ी।}
- ④ आनिष्टशोक्ति: किसी व्याकरण या वस्तु का बढ़ायड़ा कर वर्णन किया जाये, अथवा सीमा के बाहर तक की बात की जाये।
 उँगली: बांधा था विघु को किसे इन काली जंजिरों से।
 माणी वाले फाणियों का मुख, क्यों आरा हुड़ा था हीरोंदो।
 पिया / पुमिका, चन्द्रमा
 की जोती गरी गोंग
- ⑤ संदेह अलंकार: किसी वस्तु को देखकर संदेह बना रहे, और निश्चय न हो सके। उँगली: सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
 कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही सारी है।
- ⑥ आंतिमान (श्रम) अलंकार: जहाँ समानता के कारण किसी वस्तु में (उपमेय)
 अन्य वस्तु का (उपमान अ) श्रम हो जाये।
 उँगली: पाँय महावर देन को नाइन छोड़ी आय। { ऐड़ी की लालिमा
 पुनि-पुनि जान महावरी ऐड़ी प्रोड़ति जाय॥ } का महावर से श्रम
- ⑦ विशेषाभास: जब दो विशेषी पदार्थों का सेवयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विशेषाभास अलंकार होता है।
 उँगली: सुलगी अनुराग की आग वहाँ, } जल और आग में
 जल से भरपूर तड़ाग जेदाँ॥ } विशेषाभास है।

(iv) यदि विसर्ग (ः) के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग (ः) का रूप नहीं बदलता।

इजः + कण = रजःकण, पयः + पान = पयःपान

(v) विसर्ग (ः) + च, छ, श → श'

कः + चित् = कश्चित्, दुः + शास्त्र = दुश्शास्त्र,

निः + चत् = निश्चयत्, निः + दल = निश्चिल

(vi) विसर्ग (ः) + ञ, ठ, घ → घ'

दुः + ट = दुष्ट, नः + ञ = नष्ट

(vii) विसर्ग (ः) से पहले इया "उ" हो बाद में क, ख, प, या फ, तो विसर्ग (ः) → घ

निः + काम = निष्काम, निः + कपट = निष्कपट, निः + पाप = निष्पाप

(viii) विसर्ग (ः) के बाद त, थ, या स हो तो विसर्ग (ः) → स्

मनः + ताप = मनस्ताप, निः + संदेह = निस्सन्देह

- निम्न में संधि बतायें ?

- ① अत्यल्प →
- ② पावन →
- ③ दिग्भवर →
- ④ निष्पाप →
- ⑤ वर्नोषधि →
- ⑥ सूर्योदय →
- ⑦ अविष्कर →
- ⑧ सत्यरिति →
- ⑨ सप्तर्षि →
- ⑩ मनोबल →
- ⑪ तथैप →
- ⑫ गंगोदक →
- ⑬ अत्यादश्यक →
- ⑭ यशोधरा →
- ⑮ तन्मय →

निम्न में संधि विच्छेद बतायें।

- ① पुनर्जन्म _____
- ② पितृण _____
- ③ शुद्धिष्ठिर _____
- ④ सलभि _____
- ⑤ तपोभि _____
- ⑥ वृत्युपरांत _____
- ⑦ उपर्युक्ति _____
- ⑧ अन्वेषण _____
- ⑨ जग्धीश्वा _____
- ⑩ रामायण _____
- ⑪ उज्ज्वल _____
- ⑫ निराहार _____
- ⑬ मनोआव _____
- ⑭ स्वागत _____
- ⑮ निष्पीकार _____

③ अयादि सन्धि: जब ए, से, ओ, औं के बाद कोई भी स्वर आये तो,
 ↓ ↓ ↓ ↓
 अय् आय् ओव् आव्

(2)

ए + अ = अय् → ने + अन = नयन

ऐ + अ = आय् → नै + अक = नायक

ओ + अ = ओव् → ओ + अन = अवन

औ + अ = आव् → औ + अक = पावक

④ वृद्धि सन्धि: जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, से, ओ, औं आए तो
 ए → ऐ, से → ओ, औं → हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ → परम + स्वर्गी = परमेश्वरी

आ + ए = ओ → तथा + एव = तथेव

आ + ऐ = ओ → महा + एश्वरी = महेश्वरी

अ + ऐ = ओ → धर्म + एक्य = धर्मेक्य

अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक

अ + औ = ओ → जल + औषधि = जलौषधि

आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज

आ + औ = ओ → महा + औदार्य = महौदार्य

⑤ गुण सन्धि: 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, एट आये
 तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए), (ओ), (उर) हो जाते हैं।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र

आ + इ = ओ → महा + इन्द्र = महेन्द्र

अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर

आ + ई = ओ → महा + ईश्वर = महेश्वर

अ + उ = औ → पर + उपकार = परोपकार

आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

उ + एट = उर → देव + एटाधि = देवार्धि

आ + एट = ओर → राजा + एटाधि = राजार्धि

आ + एट = ओर → राजा + एटाधि = राजार्धि

⑥ पूर्वरूप सन्धि: 'अ', 'ए' या 'ओ' के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप का
 चिन्ह "s" हो जाते हैं। लोको + अभ्यन् = लोकोडयन्, हरे + अव = हरेऽप
 हरे + अत = हरेऽत, प्रभो + अवत् = प्रभोऽवत्

साम्राज्य दैनंदी

①

कारक

" संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध किया और दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है, वह "कारक" कहलाता है।
 ⇒ हिन्दी में मुख्यतः आठ कारक होते हैं जिनका विवरण निम्नवर्त में :-

① कर्ता कारक: ("ने") → संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किया का करने वाले का बोध हो उसे "कर्ता" कारक कहते हैं।
 * गीता वृत्य कर रही है। → गीता "कर्ता कारक" परसर्गराहित।
 * राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। → राम ने "कर्ता कारक" परसर्ग-साहित।

② कर्म कारक: ("को") → जिस व्यक्ति या वस्तु पर किया का फल पड़े।
 * रावण को राम द्वारा मारा। कर्मकारक - रावण
 * डाक्टर पुस्तक पढ़ता है। कर्मकारक - पुस्तक

③ करण कारक: ("से") कर्ता जिस साधन या उपकरण से किया सम्बन्ध करता है, उसे करण कारण कहते हैं।
 * माली खुरपी से घास खोंद रहा है। (खुरपी)
 * मैं रेल से आया हूँ। (रेल)

④ सम्प्रदान कारक: (केलि, से) - जिसके लिए किया की जाय, उसका बोध करने वाला बाण "सम्प्रदान कारक" कहते हैं।
 * बच्चे के लिए इधर आयी। (बच्चे के लिए)
 * मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ। (पूजा के लिए)

⑤ अपादान कारक: संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथक्ता (अलग होना) का बोध हो।
 * अनुल ने डाल से छल लेडा। (डाल से)
 * पतंग बच्चे के हाथ से दूट गई। (हाथ से)

⑥ सम्बन्ध कारक: संज्ञा व सर्वनाम का रूप जिससे वाक्य में आये (कि, की, के) हुए इन्युक्ति या वस्तु से उसके सम्बन्ध का बोध हो।
 * यह रमेश का घर है। (रमेश का)
 * यह उसकी पुस्तक है। (उस की)

होमवक्ता - समाप्त चिन्हित करे?

(3)

- ① विर्विवाद _____
- ② तुलसीदृष्टि _____
- ③ नवयुवक _____
- ④ रसोईधर _____
- ⑤ चन्द्रभाल _____
- ⑥ सुलोचना _____
- ⑦ चौराहा _____
- ⑧ गुणहीन _____
- ⑨ इयामसुंदर _____
- ⑩ छनपट _____
- ⑪ अयभीति _____
- ⑫ नीलकंठ _____
- ⑬ रोगपीड़ित _____

- ⑯ प्रतीमान _____
- ⑭ वीरपुरुष _____
- ⑮ दशानन _____
- ⑯ निशाचर _____
- ⑰ नीलोत्पत्ति _____
- ⑱ पीताम्बर _____
- ⑲ चन्द्रमौलि _____
- ⑳ राजगृह _____
- ㉑ नववद्धु _____
- ㉒ लोकप्रिय _____
- ㉓ राजकाज _____
- ㉔ प्रतिदिन _____